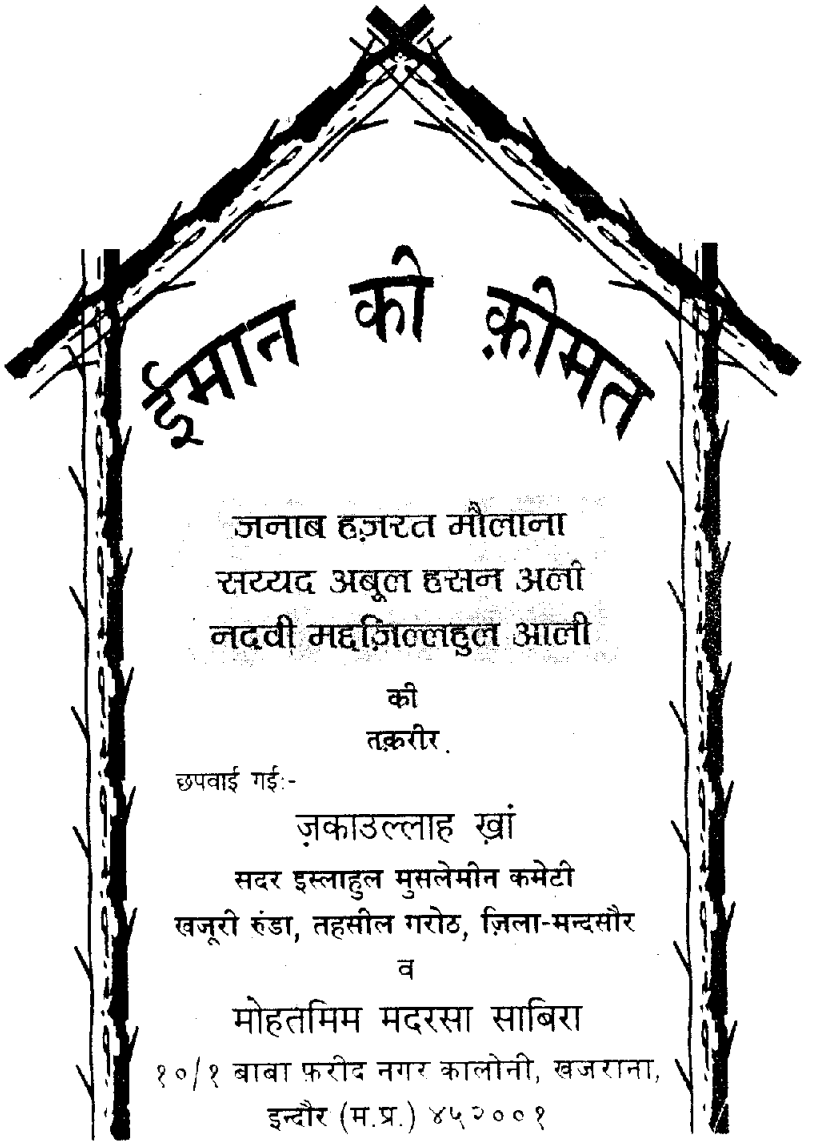

जनाब हज़रत मौलाना
सय्यद अबूल हसन अली
नदवी मद्दज़िल्लहुल आली

की
तक़रीर.

छपवाई गई:-
ज़काउल्लाह ख़ां
सदर इस्लाहुल मुसलेमीन कमेटी
खजूरी रुंडा, तहसील गरोठ, ज़िला-मन्दसौर
व
मोहतमिम मदरसा साबिरा
१०/१ बाबा फ़रीद नगर कालोनी, खजराना,
इन्दौर (म.प्र.) ४५२००१

www.abulhasanalinadwi.org

अऊज़ुबिल्लाहि मिनशशैतानिर्रजीम
बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

या अय्युहललज़ीना आमनूकू अन्फ़ुसकुम व अहलीकु नारँ व कूदु हन्नासो वल हिजारह (सूरह) तहरीम पारा २८

ए ईमान वालो तुम अपने आप को और अपने घर वालों को दोजख की आग से बचाओ जिस का ईंधन इनसान और पत्थर हैं।

हज़रत मूसाअलैहिस्सलाम का क़िस्सा:-

(सूरह ''कहफ़ में'') पारा १५

मुझे सिर्फ चंद बातें अर्ज़ करना है एक तो यह कि आप इस एहसास और शऊर को जिन्दा रखे कि **''ईमान जान से ज़्यादा प्यारा होना चाहिये** और हम इस बात को अच्छी तरह समझ लें कि अपनी जान से उसकी तन्दुरुस्ती

से, उसका **ईमानदार होना ज़्यादा ज़रूरी है**, ईमान ज़्यादा क़ीमती है। इसके लिये मैं आपके सामने कुरआन शरीफ़ की दो आयतों से इस्तदलाल करता हूँ। (दो आयतों से दलील पेश करता हूँ। और जब भी मैं इन आयतों को पढ़ता हूँ तो मुझे ताअज्जुब होता है। मगर मुझे यह एहसास है कि बहुत कम लोगों ने इन आयतों से सही नतीजा निकाला है आज के कुरआन शरीफ़ पढ़ने वाले बहुत कम यह नतीजा निकालते हैं।

कुरआन शरीफ़ में सूरह ''क़हफ़'' में यह क़िस्सा आख़िर क्यों बयान किया गया है? इस क़िस्से में हज़रत खिज़र अलैहिस्सलाम ने एक लड़के की जान लेली और वह भी एक अज़ीम पैग़म्बर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की मौजूदगी में और जब हज़रत मूसाअलैहिस्सलाम ने हज़रत खिज़र अलैहिस्सलाम से पूछा कि

www.abulhasanalinadwi.org

आपने इस मासूम बच्चे के साथ यह क्या मामला किया? इस का क्या क़सूर था ? और ऐसा कौन सा जुर्म था ? जिसकी वजह से जान से ही मार डाला गया।

हज़रत खिज़र अलेहिस्सलाम ने जवाब दिया कि इस के माँ बाप दोनों है। और यह फ़ितना बनने वाला था । अगर यह ज़िन्दा रहता तो उन दोनों के ईमान के लिये खतरा बनने वाला था (इस की वजह से उन दोनों का ईमान खतम हो जाता) मैंने इसलिये इस को मार कर उन दोनों के ईमान को बचालिया । अल्लाह तआला उनको और नेक औलाद अता कर देगा। आप सब जानते है कि इस पर अमल करना बिलकुल हराम और नाजाईज़ है कि महज़ इस खतरे से कि यह बच्चा फ़ितना बन जाएगा (हम देख रहे है कि इस ज़माने में बहुत से बच्चे फ़ितना बन रहे है) फिर यह

सवाल पैदा होता है कि कुरआन शरीफ़ में क़यामत तक के लिये इस क़िस्से को सूरह "क़हफ़" में दाख़िल कर के ज़िन्दा जावेद क्यों बना दिया यह क़िस्सा क़यामत तक पढ़ा जाता रहेगा। तो यह इसलिये किया गया कि इनसान यह समझे कि **ईमान की यह क़द्रो क़ीमत है** और **ईमान ऐसी क़ीमती चीज़** है कि उसके लिये हज़रत खिज़र अलेहिस्सलाम ने उस बच्चे की जान लेली। और कुरआन शरीफ़ पढ़ने वाले यह अच्छी तरह से समझ लें कि ईमान इतनी बड़ी चीज़ है कि उसके लिये जो चीज़ ख़तरा बनने वाली हो तो उस ख़तरे को भी दूर करना चाहिये चाहे वह चीज़ कैसी ही प्यारी और दिल को भाने वाली क्यों न हो। मगर अफ़सोस है कि हम इस तरह नहीं सोचते कुरआन शरीफ़ का यह मोजज़ा और इलहामी नुक़ता है। जिसे अल्लाह तआला ने इस क़िस्से में बयान फ़रमाया है फिर इसी सूरत में आगे बयान

किया जा रहा है कि हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम और हज़रत खिज़र अलेहिस्सलाम एक बस्ती (गाँव) में गये और वहाँ उन्होंने देखा कि एक दीवार गिरने वाली है (पूरी बस्ती वालों ने उन महमानों की कोई खबर नहीं ली नहीं खाना पेश किया। मगर हज़रत खिज़र अलेहिस्सलाम एक दीवार को बनाने में लग गये और आप जानते है कि गिरती हुई दीवार को सभालना कितना मुशकिल होता है। हैरत की बात है कि कहां से उसको संभालने का सामान इकट्ठा किया होगा और उसको बनाने में कितनी मेहनत की होगी । हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने कहा अजीब बात है। जिन्होंने खाने तक की खबर नहीं ली हमसे खाने का भी नहीं पूछा उनका कहाँ से यह हक था कि आपने उनकी दीवार को बगैर उजरत लिये दुरूस्त कर दिया । हज़रत खिज़र अलेहिस्सलाम ने जवाब दिया कि यह दीवार दो **यतीम** बच्चों

की थी। जिनका बाप मर चुका था और वह नेक आदमी था । और इस दीवार के अन्दर ख़ज़ाना था। अगर दीवार गिर जाती तो वह ख़ज़ाना निकल जाता और दुसरे लोग उसको लूट ले जाते और यह बच्चे ग़रीब ही रह जाते और इन के पास कुछ नहीं रहता ।

एक तरफ़ जान ली **"ईमान के ख़तरे से"** और दूसरी तरफ़ दीवार को दुरूस्त किया **"ईमान की फ़ज़ीलत की वजह से** यानी वह खुद भी नहीं बलकि उनके बाप नेक और अच्छे आदमी थे। हज़रत खिज़र अलेहिस्सलाम ने इस ईमान की इतनी क़दर की कि इस गिरती हुई दीवार को दुरूस्त किया और ठीक करदिया और उसमें ख़ज़ाना दबा रहा।

यह दोनों वाक़े अल्लाह तआला ने एक ही सूरत में "सूरह क़हफ़"

मैं ऊपर नीचे बयान किये ताकि आप को

www.abulhasanalinadwi.org

ईमान और 'कुफ़्र' का फ़र्क मालूम हो जाए। एक तरफ़ ईमान की यह क़ीमत कि जो बच्चा खतरा बनने वाला था उसको मार डाला गया और खत्म कर दिया गया और एक तरफ़ ईमान की यह क़ीमत कि जिन का बाप नेक और ईमानदार था, अभी बच्चे छोटे थे और यतीम थे, तो अल्लाह तआला ने उस नेक आदमी के ईमान की क़द्र करते हुए दीवार को दुरुस्त करवाकर उन यतीम बच्चों के ख़ज़ाने की हिफ़ाज़त कर दी।

ईमान को जान से ज़्यादा प्यारा समझना ईमान का तक़ाज़ा है। बस मैं यह कहता हूँ कि इस से आप ईमान की क़ीमत को समझें, अब यह हुक्म नहीं है कि जिस आदमी को खतरे के क़ाबिल समझें उस को खत्म कर दें। बल्कि बेहतर यह है कि अगर खतरा समझो तो उस को उस दीवार की तरह संभालो जो गिर रही थी,

वैसे ही अपनी औलाद को और आइंदा आने वाली नस्ल को गिरती हुई दीवार की तरह खड़ा कर दें। **और उनके ईमान को मज़बूत** बनाएं।

बात सिर्फ़ इतनी है कि अगर हमारे दिमाग़ और ज़हन ने और हमारे ईमान और अक़ीदे ने इसको मान लिया और क़बूल कर लिया कि **"ईमान जान से ज़्यादा प्यारा है"** तो फिर बच्चों के कपड़े बनाने, उनका बीमारी में इलाज कराने और उनको ऊंची से ऊंची दुनयावी तालीम दिलाने से ज़्यादा ज़रुरी यह होगा कि उनके दिल में ईमान बिठाया जाए और उनके ईमान का तहफ़्फ़ुज किया जाये और उनकी ऐसी तालीमो तरबियत की जाए कि उनका ईमान जाने नहीं पाए, आखरी बात मेरी तरफ़ से यह याद रखें कि **"ईमान जान से ज़्यादा प्यारा और अज़ीज़ होना चाहिए** अल्लाह तआला का इरशाद है कि **"या अय्युहल लज़ीना आमनू**

www.abulhasanalinadwi.org

क़ूअन फ़ुसकुम व अहली कुमनारा" ए ईमान वालो अपनी जानों को और अपने घर वालों को दोज़ख की आग मे बचाओ" दोज़ख की आग मे किस तरह बचा सकोगे? ईमान के ज़रिये मे बचा सकोगे। सबसे पहली और सबसे ज़्यादा ज़रुरी बात यह है कि अपनी आने वाली नसल के ईमान की हिफ़ाज़त का सामान करना और उन्हे उन सब बातों से बचाना। यहाँ तक कि उन स्कूलों मे बचाना जहाँ तालीम हासिल करने मे ईमान का खतरा हो और उनको एसी जगह तालीम दिलाना जहाँ पर ईमान जाने का खतरा नहीं हो (क्योंकि उनको बे इल्म रखना भी गुनाह है) इस दुनीया में पहले भी यह चीज़ जाईज़ नही थी और नही अब है कि बे इल्म रखा जाए। **तो तालीम ज़रुर होना चाहिए**, मगर तालीम इस तरह नहीं होना चाहिए कि ईमान खतरे में पड़ जाए । अगर ईमान खतरे में पड़ गया तो फिर आदमी चाहे

आसमान में उड़े या दरया पर चले और साईन्स में या इल्म जदीद (नई तालीम में) और दुसरे हुनर में चाहे जितनी तरक्की करे और चाहे दुनया में सबसे ज़्यादा दौलत वाला बन जाए मगर सच मुच में **अल्लाह तआला के यहाँ और उसके पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद सल्लललाहो अलेहि वसल्लम के यहाँ उसकी कोई क़द्रो क़ीमत और इज़्ज़त नहीं ।**

अल्लाह तआला हमें ईमान की सच्ची क़ीमत समझने, ईमान को (दुनया की हर चीज़ पर, दौलत पर, हर न्यामत पर, हर तरक्की पर, हर चाहत पर) अच्छा समझने की तोफ़ीक़ अता फ़रमाए कि अपने खुद के ईमान की भी फ़िक्र करें और अपनी औलाद के ईमान की भी फ़िक्र करें।

सबसे बढ़कर नसल मिटाने का काम ईमान और अक़ीदे को मिटाना है कि मुसलमानों की

www.abulhasanalinadwi.org

नसल तो रहे मगर उन में हक़ीक़ी ईमान बाक़ी न रहे, दीन की बातों का फ़र्क समझने की सलाहियत बाक़ी न रहे। आज इस्लाम की दुश्मन ताकतों का पूरा एक प्लान तैयार है कि मुसलमान इस्लाम पर क़ायम न रहें।

अल्लाह तआला मुस्लमानों को इस मुल्क हिन्दूस्तान में अपनी पूरी ख़ूबियों के साथ अपने ईमानी अक़ीदे के साथ, इस्लामी हमदर्दी के साथ, ईमान को बाक़ी रखने की दिली उमंग के साथ और इस्लाम का पैग़ाम दूसरे मुल्कों में पहूँचाने की तमन्ना के साथ ज़िन्दा रखे। और हमैशा ईमान पर क़ायम रहने की तोफ़ीक़ अता फरमाए और ईमान के साथ ही हमारा और हमारी औलादों का ख़ातमा फ़रमाए। आमीन, सुम्मा आमीन

बारबार पढ़कर अमल करने की कोशिश कीजिये

www.abulhasanalinadwi.org